अमृत प्रार्थना श्री राम जी से

पूज्य गुरुदेव द्वारा भगवान श्री राम से की गई प्रार्थना
रोज सुबह उठकर और रात्रि को सोते समय इस प्रार्थना को करना चाहिए।

हे प्रभु !हे अंतर्यामी!
आप इस सृष्टि के सृजन करता,पालनकर्ता और संहारकर्ता हैं। आप सर्व सामर्थ्यशाली हैं।
और मैं कुछ भी सामर्थ वाला नहीं हूँ।
मुझ पर अनंत जन्मों का प्रारब्ध भारी पड़ गया है।
कभी काम से विचलित हो जाता हूँ, कभी क्रोध से विचलित हो जाता हूँ, कभी मोह- ममता -आसक्ति से विचलित हो जाता हूँ।
मेरे पास में दुर्गुणों का,पापों का पुंज है,पहाड़ है,
जिससे मैं दब गया हूँ। आना तो चाहता हूँ आपकी तरफ लेकिन मेरा पाप मुझे आने नहीं देता।
और फिर वर्तमान में ना मेरे पास ज्ञान है, ना भक्ति है ,ना वैराग्य है।
मैं तो निर्बल हूँ, मेरे पास अपना कोई बल नहीं है।
ना वैसी श्रद्धा, ना समर्पण, ना प्रेम- विश्वास ,ना भाव है।
तो हे प्रभु! मैं आपके पास कैसे आऊँ?
आपको मैं कैसे प्राप्त करुँ?
आपने इतना तो कहा है कि "निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा"!
कि निर्मल मन वाला मुझे प्राप्त कर लेता है।
किंतु मैं तो छली भी हूँ, मैं तो कपटी भी हूँ और मेरा मन निर्मल भी नहीं।
लेकिन पता नहीं क्यों मैं आपको चाहता हूँ, आपके पास आना चाहता हूँ। आपको प्राप्त करना चाहता हूँ।
तो वहीं पर भक्त सूरदासजी,जो नेत्रहीन थे, उन्होंने भी आपको प्राप्त किया।
क्योंकि वे कहा करते हैं कि निर्बल के बल राम।
क्योंकि मैं तो निर्बल हूँ,मेरे पास कोई बल नहीं है।
आप के बल,आपके सामर्थ पर ही मुझे भरोसा है।
मैं आपके पास नहीं आ सकता, लेकिन आप तो मेरे पास आ सकते हैं।
मुझे दर्शन देने के लिए ,मेरा उद्धार करने के लिए।
हे प्रभु !मेरी प्रार्थना है! कि जिस प्रकार माँ द्रोपदी की लाज बचाने आप वस्त्र रुप में प्रकट हो गए ,जिस प्रकार गजराज की रक्षा करने के लिए आप स्वयं गरुड़ पर चढ़कर चले आए, ग्राह का वध कर गज को मुक्त किया।
जैसे आप भक्त ध्रुव की तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें चतुर्भुज रुप में दर्शन दिए,अपनी गोद प्रदान की,वैसे ही हे प्रभु!आप मेरी भी लाज बचाए!
मेरी भी रक्षा करें! मुझे भी दर्शन दें!
मेरे अवगुणों पर ना जाए, मेरे अवगुणों को ना देखें।
अपनी सामर्थ,अपनी दयालुता,अपनी कृपालुता की ओर देखें।
आप स्वयं ही मेरे ऊपर परम अनुकंपा करके मेरा उद्धार करें! मेरा उद्धार करें! मेरा उद्धार करें!
ऐसे ध्यान में बैठने से पूर्व पहले प्रार्थना करें।